गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

# गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 154
दि. 03.10.2025,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in


## गिरिराज सिंह का कांग्रेस पर तीखा हमला, कहा- मोदी होते तो ऑपरेशन सिंदूर की नौबत नहीं आती

**(जीएनएस)**। बेगूसराय। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने गुरुवार को कांग्रेस पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों में उसके नेताओं ने हमेशा कमज़ोर शासन का प्रदर्शन किया है। एएनआई से बातचीत में उन्होंने राहुल गांधी पर "अर्बन नक्सल" जैसी गतिविधियों का आरोप लगाते हुए कहा कि जब पार्टी के शीर्ष नेता इस तरह का व्यवहार करते हैं, तो उसके अन्य सदस्य भी वैसा ही सोचते हैं।

गिरिराज ने मनमोहन सिंह सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि पिछली कांग्रेस सरकार में इच्छाशक्ति का अभाव था और पार्टी पाकिस्तान को वोट बैंक के रूप में देखती थी। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि उस समय नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री होते, तो 'ऑपरेशन सिंदूर' जैसी कार्रवाई की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, क्योंकि पाकिस्तान पर कार्रवाई समय रहते की जा सकती थी। उन्होंने कहा, ₹यह अल्पमत सरकार नहीं थी, लेकिन इच्छाशक्ति कमज़ोर थी; अगर उस समय प्रधानमंत्री मोदी की सरकार होती, तो आज ऑपरेशन सिंदूर की नौबत शायद ही आती।₹

आरएसएस के 100 वर्षों के योगदान की भी उन्होंने सराहना की। गिरिराज सिंह ने कहा कि संघ ने 1971 के भारत-पाक युद्ध, बाढ़, सूखा और अन्य राष्ट्रीय आपदाओं में हमेशा सक्रिय भूमिका निभाई है। संघ के स्वयंसेवक हर संकट में सेवा के लिए सबसे आगे रहे हैं। उन्होंने देशवासियों को आरएसएस की शताब्दी पर बधाई देते हुए संगठन की निस्वार्थ सेवा और राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता की प्रशंसा की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी बुधवार को राष्ट्रीय राजधानी में आरएसएस के शताब्दी समारोह में संगठन की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता की सराहना की। उन्होंने कहा कि संघ ने वर्षों से अनगिनत लोगों के जीवन को पोषित और मजबूत किया है और यह संगठन हमेशा राष्ट्र निर्माण के उद्देश्य से काम करता रहा है। मोदी ने यह भी कहा कि जिस तरह मानव सभ्यताएँ विशाल नदियों के किनारे फलती-फूलती हैं, उसी तरह आरएसएस के प्रयासों ने समाज के अनेक जीवन तटों पर सकारात्मक बदलाव लाए हैं।

गिरिराज सिंह के बयान और प्रधानमंत्री के विचार इस बात को उजागर करते हैं कि वे राष्ट्रीय सुरक्षा, पार्टी नेतृत्व और समाज सेवा के मुद्दों को गहनता से जोड़कर देखते हैं। उनके अनुसार नेतृत्व और इच्छाशक्ति किसी भी संकट या राष्ट्रीय चुनौती का सामना करने में निर्णायक भूमिका निभाती है।

## देशभर में मतदाता सूची सुधार के लिए बिहार मॉडल लागू करेगा चुनाव आयोग, नए अधिकारी नियुक्त कर तैयारियां तेज

**(जीएनएस)**। नई दिल्ली। देश में मतदाता सूची को त्रुटि-मुक्त और अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए चुनाव आयोग ने बड़े पैमाने पर सुधारात्मक कदम उठाने का निर्णय लिया है। आयोग ने घोषणा की है कि सभी राज्यों में बिहार में अपनाई गई विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया को लागू किया जाएगा। बिहार मॉडल में पिछले वर्षों में लाखों मृतक और अवैध मतदाता नामों को सूची से हटाया गया था। इस प्रक्रिया के माध्यम से मतदान प्रणाली को सुदृढ़ और पारदर्शी बनाने के साथ ही भविष्य में किसी भी प्रकार की त्रुटियों को कम करने की योजना बनाई गई है। बिहार में एसआईआर (Special Intensive Revision) शुरू होने से पहले राज्य में कुल 7.89 करोड़ मतदाता थे। इस प्रक्रिया के दौरान प्रारूपित मतदाता सूची में 7.24 करोड़ मतदाता दर्ज हुए। लगभग 65 लाख नामों को हटाया गया, जिनमें 22 लाख मृतक व्यक्ति शामिल थे। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने बताया कि

अधिकांश मृतक हाल ही में नहीं मरे थे, बल्कि उनका रिकॉर्ड पहले दर्ज नहीं किया गया था। इस अभ्यास ने यह सुनिश्चित किया कि सूची में केवल वास्तविक और वैध मतदाता ही शामिल रहें। चुनाव आयोग ने कहा कि पहले सामान्य पुनरीक्षण में सभी घरों तक गणना फॉर्म नहीं पहुँच पाते थे। परिवार में हुई मौत की जानकारी न देने के कारण बूथ लेवल अधिकारियों को सही सूचना नहीं मिलती थी। बिहार में अपनाई गई सघन प्रक्रिया में यह कमी दूर की गई। अब मतदाता सूची को अपडेट करने की प्रक्रिया अधिक सख्त और सतर्क हो जाएगी, ताकि मृतक या स्थानांतरित मतदाता सूची में बने न रहें। इसके लिए आयोग ने आधुनिक तकनीक का सहारा लेने का निर्णय लिया है। मृत्यु पंजीकरण डेटा को इलेक्ट्रॉनिक रूप में रजिस्टार जनरल ऑफ इंडिया से प्राप्त किया जाएगा। यह डेटा मतदान पंजीकरण अधिकारियों और बूथ लेवल अधिकारियों के लिए सीधे उपलब्ध होगा, जिससे वे वास्तविक जांच करके जानकारी की पुष्टि कर सकेंगे। अधिकारियों का कहना है कि इस डेटा लिंकिंग से मतदाता सूची न केवल सटीक होगी, बल्कि भविष्य में त्रुटि रहित बनाए रखना भी संभव होगा।

भविष्य में इस प्रक्रिया के पूरी तरह लागू होने पर मतदाता सूची अधिक विश्वसनीय, अद्यतन और पारदर्शी बनेगी। इससे यह सुनिश्चित होगा कि प्रत्येक मतदान योग्य नागरिक का नाम सूची में हो और मृतक या अवैध नाम हटाए जाएँ। आयोग का मानना है कि इस तरह की पहल लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत करने के साथ ही लोगों के प्रति विश्वास बढ़ाएगी।

इसी क्रम में पश्चिम बंगाल में चुनाव आयोग ने नई नियुक्तियां भी की हैं। राज्य में चुनावी प्रक्रिया को और अधिक सुचारू और प्रभावी बनाने के लिए अरुण प्रसाद को अतिरिक्त मुख्य निर्वाचन अधिकारी और हरीशंकर पाणिकर को संयुक्त मुख्य निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया गया। यह निर्णय उस समय लिया गया जब आयोग अक्तूबर में राज्य में विशेष सघन पुनरीक्षण कार्यक्रम लागू करने की तैयारी कर रहा था। अरुण प्रसाद 2011 बैच के आईएएस अधिकारी हैं और पश्चिम बंगाल कैडर से संबंधित हैं, जबकि हरीशंकर पाणिकर 2013 बैच के आईएएस अधिकारी हैं। चुनाव आयोग ने डिप्टी मुख्य निर्वाचन अधिकारी के खाली पदों के लिए भी नए उम्मीदवारों की सूची मांगी है। राज्य सरकार आयोग की दिशा-निर्देशों के अनुसार सूची तैयार कर भेज रही है। अधिकारियों ने कहा कि ये नियुक्तियां अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों को बिना किसी व्यवधान के सफलतापूर्वक आयोजित कराने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

## भारत-चीन ने सीधी उड़ानों की बहाली का किया ऐलान, पांच साल बाद फिर शुरू होंगी यात्री सेवाएं

**(जीएनएस)**। नई दिल्ली। भारत और चीन पांच साल बाद इस महीने के अंत से दो देशों के बीच सीधी यात्री उड़ानों को फिर से शुरू करेंगे। विदेश मंत्रालय (एमईए) ने गुरुवार को बताया कि कोविड-19 महामारी और 2020 में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर हुई झड़पों के बाद निलंबित यह हवाई संपर्क अब बहाल किया जा रहा है।

बजट एयरलाइन इंडिगो ने घोषणा की कि वह 26 अक्टूबर, 2025 से कोलकाता और गुआंगझोउ के बीच नॉन-स्टॉप दैनिक उड़ानें शुरू करेगी। इसके तुरंत बाद दिल्ली और गुआंगझोउ के बीच भी सीधी सेवा प्रारंभ की जाएगी। इस कदम से व्यापारिक और पर्यटन गतिविधियों को नया प्रोत्साहन मिलने की उम्मीद है।

सीधी उड़ानों की बहाली प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हाल ही में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए सात साल में पहली बार चीन यात्रा के कुछ हफ्तों बाद हुई है। इस यात्रा के दौरान मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने दोनों देशों को ₹प्रतिद्वंद्वी

नहीं, बल्कि विकास साझेदार₹ करार दिया और वैश्विक टैरिफ अस्थिरता के बीच व्यापार एवं आर्थिक सहयोग बढ़ाने के उपायों पर चर्चा की।

हालांकि, भारत और चीन के बीच व्यापारिक असंतुलन लगातार बढ़ रहा है और भारत का व्यापार घाटा लगभग 99.2 अरब डॉलर तक पहुँच गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस मुद्दे के साथ-साथ एलएसी पर "शांति और स्थिरता" बनाए रखने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। यह कदम दोनों देशों के बीच राजनयिक और व्यापारिक संबंधों को सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

इस बहाली से न केवल व्यापारिक लेन-देन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि पर्यटन और लोगों के बीच संपर्क भी बढ़ेगा, जिससे दोनों देशों के बीच आर्थिक और सांस्कृतिक सहयोग को नया बल मिलेगा।

## चैतन्यानंद सरस्वती केस: तीन महिला अधिकारियों की गिरफ्तारी, आरोप गंभीर

**(जीएनएस)**। नई दिल्ली। यौन शोषण के विवादित मामले में चैतन्यानंद सरस्वती की मदद करने के आरोप में दिल्ली पुलिस ने श्री शारदा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन मैनेजमेंट की तीन वरिष्ठ महिला अधिकारियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार अधिकारियों में एसोसिएट डीन श्वेता शर्मा, कार्यकारी निदेशक भावना कपिल और वरिष्ठ संकाय सदस्य काजल शामिल हैं। पुलिस ने बताया कि इन तीनों पर पीड़िता को धमकाने, सबूत मिटाने और आरोपी को संरक्षण देने जैसे गंभीर आरोप हैं।

जांच के दौरान यह सामने आया कि संस्थान की ये अधिकारी चैतन्यानंद सरस्वती की मदद करने में अहम भूमिका निभा रही थीं। कुछ दिन पहले पुलिस ने तीनों को आरोपी के सामने बिठाकर पूछताछ की थी। इस पूछताछ के दौरान उनके बयान और भूमिका पर संदेह पैदा हुआ, जिसके बाद गिरफ्तारी की तैयारी की गई।

गुरुवार को दिल्ली पुलिस की विशेष टीम उत्तराखंड के अल्मोड़ा पहुंची और वहां

स्थित गेस्ट हाउस समेत कई ठिकानों पर तलाशी अभियान चलाया। तलाशी के दौरान पुलिस ने आरोपी और उसकी मददगार टीम के खिलाफ महत्वपूर्ण सबूत जुटाए। अब इन तीनों अधिकारियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू हो गई है। इस मामले ने शिक्षा संस्थानों में यौन शोषण और संरक्षण के मामलों पर नए सवाल खड़े कर दिए हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि संस्थान के अधिकारी भी संरक्षण में शामिल हों, तो पीड़ितों की सुरक्षा और न्याय की प्रक्रिया पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। गिरफ्तार अधिकारियों से पूछताछ के बाद ही आगे की कार्रवाई तय की जाएगी।

चैतन्यानंद सरस्वती केस की जटिलता और इसमें शामिल संस्थागत साजिश ने समाज और प्रशासन के लिए यह संदेश भी दिया है कि यौन शोषण और उसके संरक्षण के मामलों में किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा। पीड़िता को न्याय दिलाने और आरोपियों को सजा दिलाने के लिए पुलिस और न्यायपालिका पूरी सतर्कता के साथ काम कर रही है।

## कर्नाटक कांग्रेस में नेतृत्व विवादः डीके शिवकुमार ने जताई कड़ी आपत्ति

**(जीएनएस)**। बंगलूरू। कर्नाटक में कांग्रेस पार्टी के भीतर नेतृत्व परिवर्तन को लेकर उठ रही चर्चाओं ने गुरुवार को नया मोड़ लिया, जब उप मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने इस पर कड़ी आपत्ति जताई। उन्होंने कहा कि पार्टी के कुछ सदस्यों द्वारा ऐसी बातें फैलाना पार्टी की छवि और संगठन को नुकसान पहुंचा सकता है। हाल ही में कांग्रेस विधायक और शिवकुमार के रिश्तेदार एच डी रंजनाथ तथा मांड्या के पूर्व सांसद एलआर शिवारामे गौड़ा ने चर्चा छेड़ दी थी कि शिवकुमार अगले मुख्यमंत्री होंगे और यह बदलाव नवंबर में हो सकता है। इस बयान ने राजनीतिक गलियारों में हलचल पैदा कर दी। डीके शिवकुमार ने स्पष्ट किया कि कुनिगल विधायक रंजनाथ समेत किसी को भी सत्ता साझेदारी या नेतृत्व परिवर्तन के विषय में बोलने की अनुमति नहीं है। उन्होंने कांग्रेस के राज्य कार्यकारी अध्यक्ष जीसी चंद्रशेखर को निर्देश दिया कि ऐसे नेताओं को नोटिस जारी किया जाए और उन्हें चेतावनी दी जाए। शिवकुमार ने कहा कि पार्टी का अनुशासन बनाए रखना जरूरी है और यह मामला अब बंद माना जाए, क्योंकि मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने साफ कर दिया है कि वे अपने पूरे पांच साल का कार्यकाल पूरा करेंगे। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि कांग्रेस के भीतर इस तरह के बयान और चर्चाएं संगठनात्मक एकता को प्रभावित कर सकती हैं। इसके बावजूद, शीर्ष नेतृत्व ने स्पष्ट कर दिया है कि कोई भी व्यक्तिगत दावेदारी या आंतरिक विवाद पार्टी की प्राथमिकताओं को प्रभावित नहीं करेगा। शिवकुमार का कड़ा रुख इस बात का संकेत है कि पार्टी अनुशासन और सुदृढ़ नेतृत्व बनाए रखने के लिए सतर्क है।

## देशभर में दशहरा उत्सवः रावण दहन के रंग और विविधता

**(जीएनएस)**।नई दिल्ली। देशभर में गुरुवार को दशहरा पर्व पर रावण का दहन बड़े उल्लास और भव्यता के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न राज्यों में आयोजन अपनी-अपनी शैली और सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ संपन्न हुए, जिनमें जनता ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश लिया।

राजस्थान के कोटा में इस साल देश का सबसे ऊँचा रावण पुतला जलाया गया। 221 फीट ऊँचा रावण और उसके साथ मेघनाद के पुतले को दहन के लिए तैयार किया गया। मेघनाद दहन के दौरान हाथी बेकाबू हो गया, जिससे कार्यक्रम में थोड़ी अफरातफरी हुई। वहीं, डीग में रावण दहन के समय पटाखा गिरने से छह लोग झुलस गए। कोटा ने इस बार देश में सबसे ऊँचे रावण पुतले का रिकॉर्ड बना लिया, जो पहले दिल्ली के 210 फीट के रावण से अधिक है।

दिल्ली में लाल किले के रामलीला मैदान में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने लवकुश रामलीला के कार्यक्रम में तीर

चलाकर रावण का दहन किया। राजधानी में भारी बारिश के कारण लोग कुर्सियों और होर्डिंग्स के नीचे खड़े होकर कार्यक्रम का आनंद लेते नजर आए। खराब मौसम के कारण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को इंद्रप्रस्थ और पीतमपुरा में आयोजित दशहरा महोत्सव में शामिल होना रद्द करना पड़ा।

पटना के गांधी मैदान में भी रावण दहन उत्सव का आयोजन हुआ। यहां 80 फीट का रावण, 75 फीट का मेघनाद और 70 फीट का कुंभकर्ण का पुतला बारिश के बावजूद जलाया गया। हालांकि, रावण के सिर पर लगी क्षति के बावजूद कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कर्नाटक के मैसुरु में दशहरा समारोह के उद्घाटन में मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने बुकर पुरस्कार विजेता बानु मुश्ताक को धन्यवाद दिया और शहर में दशहरा उत्सव की सफलता के लिए मंत्रियों और अधिकारियों की सराहना की। यह उनके बतौर मुख्यमंत्री आठवें मैसुरु दशहरा का अवसर था, और उन्होंने जनता के आशीर्वाद को इस सफलता का मुख्य कारण बताया। पंजाब के लुधियाना में ऐतिहासिक दरेसी मैदान में भी रावण दहन का भव्य आयोजन हुआ। पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष अमरिंदर सिंह ने रिमोट के बटन दबाकर रावण दहन किया और इसे सत्य की असत्य पर, नेकी की बुराई पर विजय का प्रतीक बताया। इसी तरह, चंडीगढ़ के सेक्टर-46 दशहरा ग्राउंड में राज्यपाल और प्रशासक गुलाब चंद कटारिया मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने पुतला दहन के माध्यम से बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश दिया।

इस प्रकार देशभर में दशहरा के पर्व ने न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखा, बल्कि समाज में अच्छाई, नैतिकता और साहस के प्रतीक के रूप में रावण दहन के माध्यम से नकारात्मक प्रवृत्तियों पर विजय का संदेश भी दिया। हर राज्य ने अपनी परंपरा और स्थानीय रीति-रिवाजों के साथ इस पर्व को मनाया, जिससे दशहरा का उत्सव देशव्यापी रूप से हर वर्ग और समुदाय के लोगों तक पहुँच पाया।

## संपादकीय

# असली जंग बाहर नहीं, भीतर है

भारत की सांस्कृतिक परंपराओं में हर पर्व केवल उत्सव नहीं होता, बल्कि जीवन और समाज के लिए गहरा संदेश समेटे होता है। वर्षा ऋतु के बाद जब शरद का मौसम आता है, तो पर्व-त्योहारों की एक शृंखला समाज को नई ऊर्जा से भर देती है। नवरात्र में कन्या-पूजन हमें केवल "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" तक सीमित नहीं करता, बल्कि उससे भी आगे जाकर नारी को गरिमामय स्थान देने की प्रेरणा देता है। रामलीलाओं में त्याग, अनुशासन और पारिवारिक मूल्यों का संदेश छिपा है, और लंकादहन हमें यह सिखाता है कि भोग-विलास के साधन क्षणभंगुर हैं। दशहरे पर जलता हुआ विशालकाय रावण यही बताता है कि बुराई कितनी भी बड़ी क्यों न हो, उसका अंत निश्चित है।

लेकिन सवाल यह है कि जब हर साल हम लाखों रावण जलाते हैं, तो समाज में रावण क्यों समाप्त नहीं होता? क्यों आज भी हर ओर छोटी-छोटी रावणी प्रवृत्तियां पनपती जा रही हैं? वास्तव में रावण एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक मानसिकता है। यही कारण है कि जब उसका पुतला आग की लपटों में स्वाहा होता है, तो वह मानो अट्टहास करता हुआ प्रतीत होता है—जैसे कह रहा हो, "तुमने मुझे पुतलों में जलाया है, लेकिन मैं तो तुम्हारे भीतर अब भी जिंदा हूं।"

आज का समाज इसी रावणी सोच से ग्रसित दिखाई देता है। अहंकार, ईगो, असहनशीलता, हिंसा, नफरत, लोभ, लालच और बदलाखोरी जैसे विकार हर ओर दिखाई देते हैं। शक के आधार पर किसी को मार देना, खून के रिश्तों को तोड़कर छल और विश्वासघात करना, आर्थिक और राजनीतिक ताकत से कमजोर को दबाना, छोटे-छोटे विवादों में खून-खराबा कर देना—ये सब आधुनिक रावण की ही छवियां हैं। मेघनाद और कुंभकरण भी कहीं बाहर नहीं, बल्कि हमारे भीतर ही जीवित हैं। मेघनाद का दंभ और अहंकार, कुंभकरण का आलस्य और प्रमाद—ये सब आज के इंसान की कमजोरियां बनकर हमें पीछे धकेल रही हैं।

वास्तविक समस्या यह है कि समाज रावण को केवल प्रतीकात्मक रूप में जलाता है, पर उसकी सोच को मिटाने का प्रयास नहीं करता। हम उत्सव मनाते हैं, मेले सजते हैं, आतिशबाजी होती है, कारीगरों की रोज़ी-रोटी चलती है—ये सब सही है और आवश्यक भी है, लेकिन अगर इन पर्वों का मर्म ही न समझा जाए तो इनका वास्तविक महत्व खो जाता है। दशहरा हमें केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्ममंथन की सीख देता है। यह हमें झकझोरकर पूछता है—क्या हम भी तो रावणी प्रवृत्तियों के गुलाम नहीं बनते जा रहे?

सच तो यह है कि आज के समय में रावण बनना आसान है और राम जैसा बनना कठिन। राम त्याग, मर्यादा, करुणा, संयम और धर्म के प्रतीक हैं, और इन गुणों को साधना कठिन है। वहीं रावण दंभ, क्रोध और लोभ का प्रतीक है, और इन प्रवृत्तियों में गिरना आसान है। यही कारण है कि समाज में रावण बार-बार जन्म लेता है। इसलिए केवल पुतलों को जलाना पर्याप्त नहीं। हमें अपने भीतर और समाज में पनप रही रावणी सोच से लड़ना होगा। जब तक हम इन आसुरी प्रवृत्तियों का सामूहिक प्रतिकार नहीं करेंगे, तब तक समाज पर अंधकार का साम्राज्य बना रहेगा। विजयादशमी का वास्तविक अर्थ तभी पूर्ण होगा जब हम अपने भीतर के रावण को हराकर रामत्व को जगा पाएंगे।

# राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के गौरवशाली सौ वर्ष

> संघ के जातिवादी होने के सवाल पर विज्ञान भवन के कार्यक्रम में भागवत जी ने कहा था कि अगर भारत में अंतररजातीय विवाहों की गणना किया जाए तो अंतरजातीय विवाह करने वालों में सबसे ज्यादा संख्या संघ के स्वयंसेवकों की होगी।

डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार ने पावन पर्व विजयदशमी के दिन 27 सितंबर 1925 को महाराष्ट्र के नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की स्थापना राष्ट्र, संस्कृति व समाज हित के लिए की थी। संघ स्थापना काल से लेकर के आज तक देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय ढांचे को मजबूत करते हुए अपने कार्यों के दम पर करोड़ों लोगों के जीवन को बेहतर बनाते हुए, राष्ट्र निर्माण में पूरी निष्ठा व ईमानदारी से योगदान देने का कार्य निरंतर कर रहा है। हालांकि देश में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माण के दिन से ही उसके बारे में तरह-तरह का दुष्प्रचार करने की क्षणिक स्वार्थ पूरा करने वाली राजनीति की जबरदस्त ढंग से होती रही है, यह लोग ओछी राजनीति से वशीभूत होकर के राष्ट्र निर्माण में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ यानी कि आरएसएस की कोई भी भूमिका नहीं रही, आम जनमानस को ऐसा बता कर के संघ के प्रति आम जनमानस को बरगलाने का प्रयास करते हैं, जो सरासर ग़लत है। वैसे भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्र निर्माण के लिए किये गये कार्यों की लंबी फेरहिस्त देखें तो उससे यह स्पष्ट होता कि राष्ट्र के निर्माण में राष्ट्रीय स्वयंसेवक का हमेशा अनमोल योगदान रहा है, उस योगदान की अनदेखी करना देश हित व समाज हित में उचित नहीं है। इसलिए समय रहते हम लोगों को यह समझना होगा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ देश का अनुशासित सांस्कृतिक संगठन है, संघ का स्वयंसेवक बिना किसी लोभ-लालच के राष्ट्र व समाज के लिए निस्वार्थ भाव से अपने तन, मन और समय को अर्पित करने का कार्य करता है। एक सच्चे स्वयंसेवक का जीवन

केवल निजी उपलब्धियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह अपनी सांसों को भी मातृभूमि की सेवा का साधन बना देता है, वह राष्ट्र के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए हर पल तत्पर रहता है। वैसे भी किसी भी ताकतवर राष्ट्र के निर्माण के लिए अनुशासन व नैतिकता बेहद आवश्यक होती है, इन दोनों के बिना किसी भी ताकतवर राष्ट्र का निर्माण संभव नहीं है और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के स्वयंसेवक के लिए नैतिकता व अनुशासन सर्वोपरि होता है, इसलिए उसका राष्ट्र निर्माण में अहम योगदान संघ सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय निर्माण की विचारधारा के दम पर ही दुनिया भर में अपनी विशेष पहचान रखता है। यह देश व दुनिया का एक ऐसा संगठन है जो अपनी विशेष कार्यशैली के दमखम पर दुनिया में सनातन धर्म-संस्कृति के रक्षक तौर पर और एक बहुत बड़े सामाजिक संगठन के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है। संघ अपने निर्माण के सौ वर्षों के लंबे सफ़र के बाद अब अपनी कार्यशैली के बलबूते दुनिया के ताकतवर बड़े गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) में शुमार हो गया, आज भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक फैलें हुए हैं और सबसे अहम बात यह है कि संघ दुनिया भर का एक ऐसा संगठन है, जोकि अपनी स्थापना के सौ वर्षों के बाद भी अपनी विचारधारा व उद्देश्यों से जरा भी नहीं भटका है, आज भी अपनी विचारधारा पर संघ पूरी तरह से कायम है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ संगठन की सबसे बड़ी खूबी यह है कि संघ के राष्ट्र निर्माण व समाज के लिए पूरी तरह से निस्वार्थ भाव से समर्पित स्वयंसेवकों की टोली हमेशा अपना कार्य निस्वार्थ भाव से करना जारी रखती और कभी भी श्रेय लेने तक का भी प्रयास नहीं करती है। हालांकि देश व दुनिया में जब से डिजिटल क्रांति आयी है तब से लोगों को यह पता चलने लगा है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने स्थापना काल के दौर से ही राष्ट्र निर्माण, एकता और सांस्कृतिक जागरण के दीप को प्रज्ज्वलित करते हुए समाज को संगठित करने और सांस्कृतिक गौरव बढ़ाने पर जोर दिया है। देश की आज़ादी के दौर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जहां लोगों को राष्ट्रभक्ति के भाव से ओतप्रोत करने का कार्य बखूबी किया था, वहीं आजाद भारत में संघ ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने के प्रयास करते हुए एकता और आत्मविश्वास को बढ़ाने का कार्य करते हुए राष्ट्र व समाज हित में निरंतर कार्य कर रहा है। आज देश के दूरदराज इलाकों तक में भी संघ अपनी 55 हज़ार शाखाओं व करोड़ों स्वयंसेवकों के माध्यम से पहुंच कर जनहित व राष्ट्रहित के कार्यों को निरंतर अंजाम दे रहा है। राष्ट्र निर्माण के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य की बात करें तो संघ के स्वयंसेवकों ने वर्ष 1947 में देश के विभाजन के दौरान पाकिस्तान से आए हुए विस्थापितों की सहायता करते हुए, उन लोगों के जान-माल की सुरक्षा करने का कार्य बड़े पैमाने पर किया था। संघ ने दादरा, नगर हवेली और गोवा के विलय में निर्णायक भूमिका निभाने का कार्य किया था, 2 अगस्त 1954 की सुबह संघ के स्वयंसेवकों ने पुतर्गाल का झंडा उतारकर तिरंगा फहरा कर पुतर्गाल के कब्जे से मुक्त करवाया था। संघ के स्वयंसेवक 1955 से चले गोवा मुक्ति संग्राम में शामिल रहे, उन्होंने गोवा में सशस्त्र हस्तक्षेप करने से तत्कालीन सरकार के द्वारा इनकार करने पर जगन्नाथ राव जोशी के नेतृत्व में गोवा पहुंच कर के आंदोलन शुरू किया था, लेकिन बाद में जब जगन्नाथ राव जोशी सहित संघ के कार्यकर्ताओं को दस वर्ष की सजा हुई तो गोवा के हालत बिगड़ने पर अंततः भारत सरकार के सैनिकों को हस्तक्षेप करना पड़ा था और वर्ष 1961 में संघ की क्रांति के दीप से ही गोवा भी स्वतन्त्र हुआ था।

संघ के स्वयंसेवक अनुशासन व ट्रेनिंग के दम पर ही तो देश में सामाजिक सेवा, आपदा प्रबंधन के कार्य में बढ़-चढ़कर के हिस्सा लेते आये है। भूकंप, बाढ़, अग्निकांड, चक्रवाती तूफ़ान, युद्ध, महामारी (प्लेग व कोरोना आदि) और अन्य राष्ट्रीय संकटों के समय हमेशा अपनी जान की परवाह किए बिना ही राहत व बचाव के कार्यों में बढ़-चढ़कर के सक्रिय भूमिका निभाते हुए नज़र आते हैं।

विद्या भारती, सेवा भारती जैसे संगठनों के माध्यम से संघ देश में शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में कार्यरत हैं। विद्या भारती जैसे संघ के संगठनों ने भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने का कार्य पूरे देश में चला रखा है। देश में हजारों स्कूलों के माध्यम से लाखों छात्रों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा निरंतर प्रदान की जा रही है। संघ के द्वारा शिक्षा के माध्यम से नैतिकता, देशभक्ति और सामाजिक समरसता जैसे मूल्यों को युवा पीढ़ी में स्थापित करने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है। आज देश में 86 प्रांतीय एवं क्षेत्रीय समितियाँ विद्या भारती से संलग्न हैं। जिसके अंतर्गत 30 हज़ार शिक्षण संस्थाओं में 9 लाख शिक्षकों के मार्गदर्शन में 45 लाख छात्र-छात्राएं शिक्षा एवं संस्कार ग्रहण कर रहे हैं। इनमें से 49 शिक्षक प्रशिक्षक संस्थान एवं महाविद्यालय, 2353 माध्यमिक एवं 923 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, 633 पूर्व प्राथमिक एवं 5312 प्राथमिक, 4164 उच्च प्राथमिक एवं 6127 एकल शिक्षक विद्यालय तथा 3679 संस्कार केंद्र हैं। वहीं आज देश के विभिन्न दूरदराज तक के हिस्सों में शिशु वाटिकाएं, शिशु मंदिर, विद्या मंदिर, सरस्वती विद्यालय, उच्चतर शिक्षा संस्थान, शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र और शोध संस्थान हैं।

## प्रेरणा

# सच्चा पुण्य – जो बिना अपेक्षा के दिया जाए

एक छोटे से गाँव में जंगल के किनारे एक वृद्धा महिला रहती थी। उसके पास न कोई धन-दौलत थी, न ही बड़ी संपत्ति। उसका जीवन सादगी, तप और श्रम पर टिका हुआ था। रोज़ सुबह वह जंगल जाती और वहां गिरी हुई सूखी टहनियाँ बटोरकर घर ले आती। वह इतनी मेहनत करती, मानो यही उसका जीवन का संकल्प हो। जब वह घर लौटती तो अपने उपयोग के लिए कुछ टहनियाँ रख लेती और बाकी लकड़ियों का गट्ठर अपनी कुटिया के बाहर छोड़ देती। यह उसका वर्षों से बना नियम था—जो भी जरूरतमंद हो, चाहे राहगीर, चाहे कोई पड़ोसी, चाहे गरीब परिवार, वे उन लकड़ियों को ले जा सकते थे। महिला ने इसे दान का स्वरूप दे दिया था। उसके लिए यही सेवा, यही पुण्य और यही जीवन का उद्देश्य था। एक दिन गाँव का एक युवक उस वृद्धा से मिलने आया। उसने लंबे समय से देखा था कि अम्मा रोज़ मेहनत करती हैं और फिर अपनी मेहनत का बड़ा हिस्सा दूसरों के लिए छोड़ देती हैं। युवक ने अचरज से पूछा—

"अम्मा, आप इतनी मेहनत करती हैं,

जंगल से लकड़ियाँ ढोकर लाती हैं, लेकिन आधे से ज्यादा तो दूसरों को दे देती हैं। इसमें आपका क्या लाभ है?" अम्मा ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया—

"बेटा, मेरे पास धन नहीं है, न ही कोई और साधन। मेरी संपत्ति केवल मेरा श्रम है। यदि मैं इसे केवल अपने लिए लगाऊं तो यह स्वार्थ होगा, लेकिन जब मैं इसे दूसरों के काम में लगाती हूं तो यही पुण्य है। यही मेरा दान है। याद रखना, जीवन में लोग तुम्हें श्रेय दें या न दें, लेकिन निःस्वार्थ सहायता करना कभी मत छोड़ना। यही मानवता है और यही सच्चा धर्म है।" युवक यह सुनकर गहरे विचार में डूब गया। उसने समझा कि दान केवल धन से नहीं होता, बल्कि परिश्रम, समय और सेवा भी दान के स्वरूप हैं। असली मनुष्य वही है जो दूसरों के जीवन में बिना किसी अपेक्षा के सहारा बने। यह कथा हमें यह शिक्षा देती है कि पुण्य केवल मंदिरों में चढ़ावे या धन देने से नहीं मिलता। वास्तविक पुण्य तब मिलता है जब हम अपने श्रम, अपनी सामर्थ्य और अपने जीवन का एक हिस्सा दूसरों की भलाई के लिए समर्पित करते हैं। निःस्वार्थ सेवा ही वह अमर संदेश है, जो मानवता को जीवित रखता है और मनुष्य को ईश्वर के करीब ले जाता है।

# व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र साधना की एक सदी

सौ वर्ष पूर्व विजयादशमी के महापर्व पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई थी। ये हजारों वर्षों से चली आ रही उस परंपरा का पुनर्स्थापन था, जिसमें राष्ट्र चेतना समय-समय पर उस युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए, नए-नए अवतारों में प्रकट होती है। इस युग में संघ उसी अनादि राष्ट्र चेतना का पुण्य अवतार है। ये हमारी पीढ़ी के स्वयंसेवकों का सौभाग्य है कि हमें संघ के शताब्दी वर्ष जैसा महान अवसर देखने को मिल रहा है। मैं इस अवसर पर राष्ट्रसेवा के संकल्प को समर्पित कोटि-कोटि स्वयंसेवकों को शुभकामनाएं देता हूं। मैं संघ के संस्थापक, हम सभी के आदर्श... परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। संघ की 100 वर्षों की इस गौरवमयी यात्रा की स्मृति में भारत सरकार ने विशेष डाक टिकट और स्मृति सिक्के भी जारी किए हैं।

जिस तरह विशाल नदियों के किनारे मानव सभ्यताएं पनपती हैं, उसी तरह संघ के किनारे भी सैकड़ों जीवन पुष्पित-पल्लवित हुए हैं। जैसे एक नदी जिन रास्तों से बहती है, उन क्षेत्रों को अपने जल से समृद्ध करती है, वैसे ही संघ ने इस देश के हर क्षेत्र, समाज के हर आयाम को स्पर्श किया है। जिस तरह एक नदी कई धाराओं में ख़ुद को प्रकट करती है, संघ की यात्रा भी ऐसी ही है। संघ के अलग-अलग संगठन भी जीवन के हर पक्ष से जुड़कर राष्ट्र की सेवा करते हैं। शिक्षा, कृषि, समाज कल्याण, आदिवासी कल्याण, महिला सशक्तीकरण, समाज जीवन के ऐसे कई क्षेत्रों में संघ निरंतर कार्य करता रहा है। विविध क्षेत्र में काम करने वाले हर संगठन का उद्देश्य एक ही है, भाव एक ही है... राष्ट्र प्रथम।

अपने गठन के बाद से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र निर्माण का विराट उद्देश्य लेकर चला। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ ने व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण रास्ता चुना और इसके लिए जो कार्यपद्धति चुनी, वो थी नित्य-नियमित चलने वाली शाखाएं। संघ शाखा का मैदान, एक ऐसी प्रेरणा भूमि है, जहां से स्वयंसेवक की अहम से वयं की यात्रा शुरू होती है। संघ की शाखाएं व्यक्ति निर्माण की यज्ञवेदी हैं। राष्ट्र निर्माण का महान उद्देश्य, व्यक्ति निर्माण का स्पष्ट पथ और शाखा जैसी सरल, जीवंत कार्यपद्धति यही संघ की सौ वर्षों की यात्रा का आधार बने। इन्हीं स्तंभों पर खड़े होकर संघ ने लाखों स्वयंसेवकों को गढ़ा, जो विभिन्न क्षेत्रों में देश को आगे बढ़ा रहे हैं।

संघ जब से अस्तित्व में आया... संघ के लिए देश की प्राथमिकता ही उसकी अपनी प्राथमिकता रही। आज़ादी की लड़ाई के समय परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी समेत अनेक कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया, डॉक्टर साहब कई बार जेल तक गए। आजादी की लड़ाई में कितने ही स्वतन्त्रता सेनानियों को संघ संरक्षण देता रहा... उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करता रहा। आजादी के बाद भी संघ निरंतर राष्ट्र साधना में लगा रहा। इस यात्रा में संघ के खिलाफ साजिशें भी हुईं, संघ को कुचलने का प्रयास भी हुआ। ऋषितुल्य परम पूज्य गुरु जी को झूठे केस में फंसाया गया। लेकिन संघ के स्वयंसेवकों ने कभी कटुता को स्थान नहीं दिया। क्योंकि वो जानते हैं, हम समाज से अलग नहीं हैं, समाज हमसे ही तो बना है। समाज के साथ एकात्मता और संवैधानिक संस्थाओं के प्रति आस्था ने संघ के स्वयंसेवकों को हर संकट में स्थित प्रज्ञ रखा है, समाज के प्रति संवेदनशील बनाए रखा है। प्रारंभ से संघ... राष्ट्रभक्ति और सेवा का पर्याय रहा है। जब विभाजन की पीड़ा ने लाखों परिवारों को बेघर कर दिया, तब स्वयंसेवकों ने शरणार्थियों की सेवा की। हर आपदा में संघ के स्वयंसेवक अपने सीमित संसाधनों के साथ सबसे आगे खड़े रहते रहे। यह केवल राहत नहीं थी, यह राष्ट्र की आत्मा को संबल देने का कार्य था। खुद कष्ट उठाकर दूसरों के दुख हरना... ये हर स्वयंसेवक की पहचान है। आज भी प्राकृतिक आपदा में हर जगह स्वयंसेवक सबसे पहले पहुंचने वालों में से एक रहते हैं।

अपनी 100 वर्षों की इस यात्रा में, संघ ने समाज के अलग-अलग वर्गों में आत्मबोध जगाया... स्वाभिमान जगाया। संघ देश के उन क्षेत्रों में भी कार्य करता रहा है... जो दुर्गम हैं... जहां पहुंचना सबसे कठिन है। संघ... दशकों से आदिवासी परंपराओं, आदिवासी रीति-रिवाज, आदिवासी मूल्यों को सहेजने-संवारने में अपना सहयोग देता रहा है... अपना कर्तव्य निभा रहा है। आज सेवा भारती... विद्या भारती, एकल विद्यालय... वनवासी कल्याण आश्रम... आदिवासी समाज के सशक्तीकरण का स्तंभ बनकर उभरे हैं।

समाज में सदियों से घर कर चुकी जो बीमारियां हैं, जो ऊंच-नीच की भावना है, जो कुप्रथाएं हैं, ये हिन्दू समाज की बहुत बड़ी चुनौती रही हैं। ये एक ऐसी गंभीर चिंता है, जिस पर संघ लगातार काम करता रहा है। डॉक्टर साहब से लेकर आज तक, संघ की हर महान विभूति ने, हर सर-संघचालक ने भेदभाव और छुआछूत के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। परम पूज्य गुरु जी ने निरंतर 'न हिन्दू पतितो भवेत्' की भावना को आगे बढ़ाया। पूज्य बाला साहब देवरस जी कहते थे—छुआछूत अगर पाप नहीं, तो दुनिया में कोई पाप नहीं! सरसंघचालक रहते हुए पूज्य रज्जू भैया जी और पूज्य सुदर्शन जी ने भी इसी भावना को आगे बढ़ाया।

## अभियान

# सफलता का सच्चा मार्ग – संकल्प, श्रम और विश्वास की कथा

मनुष्य का जीवन तभी पूर्ण और सार्थक होता है जब उसमें कोई दिशा, कोई उद्देश्य और कोई लक्ष्य हो। लक्ष्यहीन जीवन वैसा ही है जैसे कोई नाव बिना पतवार के खुले समुद्र में बह रही हो। वह कभी इधर जाएगी, कभी उधर जाएगी, लेकिन किनारे तक कभी नहीं पहुंच पाएगी। जीवन में सफलता पाना हर व्यक्ति की गहरी इच्छा होती है, परंतु यह केवल सोचने या चाहने से संभव नहीं होती। इसके लिए चाहिए निरंतर प्रयास, कठोर परिश्रम, अनुशासन और सबसे बढ़कर आत्मविश्वास। जिनके जीवन में ये तत्व होते हैं, वही लोग अपने लक्ष्य तक शीघ्र पहुँच जाते हैं और अपने जीवन को सार्थक बना लेते हैं।

कहा जाता है कि सफलता उन्हीं को मिलती है जिनके पास स्पष्ट लक्ष्य होता है। एक बार एक युवक ने गुरु से पूछा – "गुरुदेव, मैं अपने जीवन में बहुत कुछ करना चाहता हूं लेकिन समझ नहीं पाता कि क्या करूं। मेरी कोई बात पूरी नहीं हो पाती।" गुरु ने मुस्कुराते हुए उसे एक तीर-कमान पकड़ा दिया और सामने दूर पेड़ की ओर संकेत करते हुए बोले – "उस पेड़ के पत्ते पर निशाना लगाओ।" युवक ने तीर चलाया,

लेकिन वह लक्ष्य से बहुत दूर जा गिरा। गुरु ने पूछा – "जब तुमने तीर छोड़ा, तब क्या देख रहे थे?" युवक बोला – "गुरुदेव, मैं पेड़, उसकी डालियाँ और आसमान सब देख रहा था।" गुरु ने समझाया – "यही कारण है कि तीर भटका। जब तक तुम्हारी दृष्टि बिल्कुल स्पष्ट और केवल लक्ष्य पर केंद्रित नहीं होगी, तब तक तुम्हारे प्रयास सफल नहीं होंगे।" यही जीवन का पहला सूत्र है – लक्ष्य को स्पष्ट करो और उस पर अपनी एकाग्रता टिकाओ।

लेकिन केवल लक्ष्य स्पष्ट करना ही पर्याप्त नहीं। उसके लिए एक ठोस योजना बनाना और उस पर दृढ़ता से काम करना भी उतना ही आवश्यक है। जिस प्रकार कोई किसान खेत में बीज बोकर प्रतिदिन उसकी देखभाल करता है, तब जाकर महीनों बाद फसल तैयार होती है, उसी प्रकार लक्ष्य की फसल भी निरंतर कर्म से ही लहलहाती है। योजना के अनुसार प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ना चाहिए। यही छोटे-छोटे कदम मिलकर मंज़िल तक ले जाते हैं।

जीवन की सबसे बड़ी रुकावट है – आलस्य और काम टालने की आदत। आलस्य से बढ़कर और कोई शत्रु नहीं। जो काम आज किया जा सकता है, उसे कल पर टालना लक्ष्य को बहुत दूर ले जाता है। सफल लोग वे नहीं जो प्रतिभाशाली पैदा होते हैं, बल्कि वे होते हैं जो समय पर अपने कार्य को पूरा करते हैं। समय का इंतजार करना व्यर्थ है क्योंकि सही समय वही है, जब आप पहला कदम बढ़ाते हैं।

सफलता का आधार आत्मविश्वास भी है। यदि व्यक्ति स्वयं पर विश्वास नहीं करता तो कोई शक्ति उसे सफल नहीं बना सकती। सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास से ही वह कठिन से कठिन परिस्थिति को पार कर सकता है। आत्मविश्वास वह दीपक है जो अंधेरे में भी रास्ता दिखाता है।

इसके साथ-साथ समर्पण और कठिन परिश्रम भी अनिवार्य हैं। जिस प्रकार नदी निरंतर बहते हुए पत्थरों को काटकर रास्ता बना लेती है, उसी प्रकार निरंतरता और श्रम से ही व्यक्ति मंज़िल तक पहुँचता है। समर्पण वह शक्ति है जो थके हुए कदमों को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

सफलता का एक और रहस्य है – चुनौतियों का सामना करना। जीवन की कठिनाइयाँ हमें तोड़ने नहीं, बल्कि गढ़ने आती हैं। चुनौतियाँ ही हमें मजबूत बनाती हैं, और नए अवसर प्रदान करती हैं। यदि हम उनसे घबराते हैं तो रुक जाते हैं, और यदि साहस से उनका सामना करते हैं तो ऊंचाइयों तक पहुँच जाते हैं।

इसलिए यदि कोई अपने जीवन में सफलता चाहता है, तो उसे इन सूत्रों को अपनाना होगा – स्पष्ट लक्ष्य, ठोस योजना, आलस्य का परित्याग, आत्मविश्वास, निरंतर परिश्रम, समर्पण और चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना। जब ये सभी गुण जीवन का हिस्सा बन जाते हैं, तो सफलता दूर नहीं रहती।

वास्तविकता यही है कि मंज़िल तक पहुँचना कठिन नहीं होता, कठिन तो केवल पहला कदम बढ़ाना होता है। जो व्यक्ति पहला कदम साहसपूर्वक उठा लेता है, उसके लिए शेष मार्ग केवल समय का प्रश्न रह जाता है। यही जीवन का संदेश है – सफलता पाने के लिए केवल सोचने से नहीं, बल्कि संकल्प और कर्म से आगे बढ़ना होता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

# ‘आई लव मुहम्मद’ पोस्टर विवाद के बाद दशहरा पर बरेली मंडल हाई अलर्ट

**(जीएनएस)।** बरेली। हाल ही में ‘आई लव मुहम्मद’ पोस्टर विवाद और जुमे की नमाज के बाद हुए बवाल के चलते पूरे बरेली मंडल में दशहरा उत्सव से पहले सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। मंडलायुक्त भूपेंद्र एस. चौधरी ने बरेली, शाहजहाँपुर, पीलीभीत और बदायूं जिलों में हाई अलर्ट घोषित किया है। संवेदनशील हालात को देखते हुए रामलीला मैदान, दुर्गा पूजा मेलों और रावण दहन जैसे आयोजनों में विशेष सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

बरेली, शाहजहाँपुर, पीलीभीत और बदायूं जिलों में पुलिस, पीएसी और आरएएफ की तैनाती बढ़ा दी गई है। ड्रोन कैमरों और सीसीटीवी के जरिए निगरानी रखी जा रही है। अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए गए हैं कि किसी भी प्रकार की लापरवाही पर तुरंत कार्रवाई होगी।

दरअसल, पिछले शुक्रवार को जुमे की नमाज के बाद बरेली में बड़ी संख्या में लोग आला हजरत दरगाह और इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल (IMC) प्रमुख मौलाना तौकीर रजा खान के घर के बाहर जमा हो गए थे। इस दौरान “आई लव मुहम्मद” लिखे पोस्टरों के साथ प्रदर्शन हुआ और पुलिस पर पथराव किया गया। इस हिंसक घटना के बाद तनाव बढ़ गया और शहर में कई इलाकों में इंटरनेट सेवाएँ बंद करनी पड़ीं।

पुलिस की जांच में सामने आया कि पथराव की साजिश इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल (IMC) से जुड़े लोगों ने रची थी। पुलिस ने अब तक संगठन के जिला प्रमुख शमसाद, एक संदिग्ध ताजीम और कई अन्य आरोपियों को मुठभेड़ों के बाद गिरफ्तार किया है। मौलाना तौकीर रजा खुद भी न्यायिक हिरासत में हैं। सीसीटीवी और ड्रोन फुटेज के जरिए भीड़ में शामिल उपद्रवियों की पहचान की जा रही है।

बरेली जिले में भारतीय दंड संहिता की धारा 144 और 163 लागू कर दी गई है। पुलिस-प्रशासन ने साफ किया है कि दशहरा और दुर्गा पूजा जैसे बड़े आयोजनों में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। सुरक्षा बलों को संवेदनशील जगहों पर तैनात किया गया है ताकि हालात बिगड़ने से पहले ही नियंत्रित किए जा सकें।

अधिकारियों का कहना है कि पड़ोसी जिलों तक इस तनाव का असर न फैले, इसके लिए खुफिया विभाग भी चौकस है। मंडलायुक्त ने साफ शब्दों में कहा कि सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने की कोशिश करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होगी।

# दशहरा रैली में शिंदे गुट का उद्धव ठाकरे पर सीधा वार, ‘सीएम पद के मोह में भूले बालासाहेब की विरासत’

**(जीएनएस)।** मुंबई। शिवसेना की परंपरागत दशहरा रैली इस बार भी सत्ता और संगठन के बीच आरोप-प्रत्यारोप का अखाड़ा बनी। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले गुट की रैली में वरिष्ठ नेता रामदास कदम ने उद्धव ठाकरे पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि मुख्यमंत्री पद के मोह ने उन्हें बालासाहेब ठाकरे की विचारधारा से भटका दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस और एनसीपी के साथ हाथ मिलाकर उद्धव ने शिवसेना को सोनिया गांधी के पैरों में झुका दिया।

रामदास कदम ने अपने भाषण में याद किया कि कैसे बालासाहेब ठाकरे के निधन के समय मातोश्री में उनका पार्थिव शरीर रखा गया था और शिवसैनिक दो दिनों तक बाहर सड़क पर बैठे रहे। उन्होंने कहा, “आज की शिवसेना देखकर आंखों में आंसू आते हैं। एक समय था जब मंच पर सभी पुराने नेता मौजूद रहते थे, लेकिन अब तस्वीर बदल गई है। जिस शिवसेना को हमने खून-पसीना देकर खड़ा किया, वही हमें मिटाने पर तुली है।”

सभा में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने भी अपनी बात रखते हुए कहा कि उनकी सबसे बड़ी पूंजी बालासाहेब के विचार हैं, न कि संपत्ति या सत्ता। उन्होंने कहा, “मेरे पास संपत्ति की भूख नहीं है। असली संपत्ति ये शिवसैनिक हैं, जो मेरे साथ खड़े हैं। जब भी मदद का समय आया, हमने बिना किसी भेदभाव के मदद दी। धर्म और जात देखकर कभी किसी को ठुकराया नहीं। हमारे लिए जनता ही सबसे बड़ी ताकत है।”शिंदे ने कहा कि मुख्यमंत्री सहायता निधि से उन्होंने गरीब और जरूरतमंदों की मदद के लिए करोड़ों रुपये दिए। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए बताया कि एक मुस्लिम लड़की ने उनसे कहा कि उनकी मदद के कारण ही उसकी जान बच सकी।

रैली में शिंदे गुट ने बार-बार इस बात पर जोर दिया कि बालासाहेब ठाकरे की शिवसेना का असली उत्तराधिकारी वही है जो उनके विचारों पर चलता है, न कि वह जो सत्ता की खातिर समझौते करता है। वहीं उद्धव ठाकरे पर लगातार तंज कसते हुए कहा गया कि उन्होंने पार्टी की पहचान और आत्मा दोनों को खो दिया है। इस तरह दशहरा रैली, जो कभी शिवसेना की ताकत और एकता का प्रतीक हुआ करती थी, अब दो गुटों की जंग का मंच बन गई है, जहां हर साल बालासाहेब की विरासत के नाम पर आरोप और दावे दोहराए जा रहे हैं।

# सीकर में सांड की क्रूर हत्या का मामला: आरोपियों के सिर मुंडवाकर निकाली गई पुलिस परेड, गांव में तनाव

**(जीएनएस)।** राजस्थान के सीकर जिले से एक हृदयविदारक घटना सामने आई है, जिसने पूरे इलाके को झकझोर दिया। नेछवा थाना क्षेत्र में कुछ लोगों ने एक बेजुबान सांड को बेरहमी से गाड़ी से कुचलकर मार डाला। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद गुस्से की लहर दौड़ गई और लोगों ने आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग शुरू कर दी।

यह घटना 30 सितंबर की रात की बताई जा रही है। जानकारी के मुताबिक, नेछवा कस्बे के बावरिया मोहल्ले में एक विवाह समारोह चल रहा था। अचानक एक सांड वहां आ गया। बोलेरो गाड़ी में सवार प्रेमचंद बावरी और उसके साथियों ने सांड को भगाना शुरू किया। प्रेमचंद ने गाड़ी पीछे लगाकर उसे कई बार टक्कर मारी। जब तक सांड की जान नहीं चली गई, गाड़ी लगातार उस पर चढ़ाई जाती रही। मौके पर मौजूद लोगों ने इस पूरी घटना का वीडियो अपने मोबाइल में कैद कर लिया और बाद में इसे सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया।

वीडियो सामने आते ही इलाके में भारी आक्रोश फैल गया। गौ भक्तों और स्थानीय ग्रामीणों ने इसे क्रूरता की पराकाष्ठा बताते हुए नेछवा थाने का घेराव कर दिया। गड़ोदा शिवमठ धाम के महंत महावीर जति महाराज के नेतृत्व में ग्रामीणों और गौ सेवकों ने पुलिस से तत्काल गिरफ्तारी और सख्त कार्रवाई की मांग की।

पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी प्रेमचंद बावरी और शिवराज बावरी सहित दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने एक अनोखा कदम उठाते हुए आरोपियों का सिर मुंडवाया और पूरे कस्बे में उनकी परेड कराई, ताकि लोगों में यह संदेश जाए कि ऐसे अमानवीय कृत्य को किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। गाड़ी को भी जब्त कर थाने में खड़ा कर दिया गया है, जबकि अन्य आरोपियों की तलाश जारी है।

इस घटना के बाद गांव में तनावपूर्ण माहौल बना हुआ है। पुलिस और प्रशासन लगातार नजर बनाए हुए हैं और शांति बनाए रखने की अपील कर रहे हैं। वहीं, गौ सेवकों और स्थानीय लोगों का कहना है कि जब तक सभी दोषियों को गिरफ्तार कर कड़ी सजा नहीं दी जाती, तब तक वे आंदोलन जारी रखेंगे।

यह घटना सिर्फ एक जानवर की हत्या नहीं, बल्कि समाज की संवेदनाओं पर गहरी चोट है। स्थानीय लोग इसे एक उदाहरण मानते हैं कि इंसान के मनोरंजन और लापरवाही की कीमत बेजुबान जानवरों को अपनी जान देकर चुकानी पड़ रही है। अब देखना होगा कि अदालत और प्रशासन दोषियों के खिलाफ कितनी कठोर कार्रवाई करता है।

# सुपौल विधानसभा: जेडीयू का 25 साल पुराना किला, जहां विपक्ष की रणनीति बार-बार ढह जाती है

**(जीएनएस)।** बिहार चुनाव 2025 की सरगर्मी तेज होते ही सुपौल विधानसभा सीट फिर से सुर्खियों में है। यह सीट राज्य की राजनीति में एक मिसाल बन चुकी है क्योंकि यहां पिछले 25 वर्षों से जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) का परचम लहराता आ रहा है। मंत्री बिजेंद्र प्रसाद यादव इस सीट पर 2000 से लगातार जीत दर्ज करते आ रहे हैं। उनके सामने विपक्ष कई बार रणनीति और गठबंधन बदलकर उतरा, लेकिन हर कोशिश असफल साबित हुई।

सुपौल की राजनीति की जड़ें आजादी के बाद से गहरी हैं। 1952 में जब पहली बार यहां चुनाव हुआ तो कांग्रेस नेता लहटन चौधरी विजयी बने। 1967 से लेकर 1972 तक कांग्रेस ने लगातार अपना दबदबा बनाए रखा। लेकिन 1990 में राजनीति का समीकरण बदलना शुरू हुआ, जब बिजेंद्र प्रसाद यादव ने जनता दल के टिकट पर जीत हासिल की। इसके बाद उन्होंने 1990 और 1995 दोनों चुनाव जीते और 2000 में जेडीयू में शामिल होकर लगातार जीत का सिलसिला जारी रखा।

2020 के विधानसभा चुनाव में बिजेंद्र यादव ने कांग्रेस उम्मीदवार मिन्नतुल्लाह रहमानी को 28,099 मतों से हराया। उस समय जेडीयू का वोट प्रतिशत 50 से अधिक रहा, जबकि कांग्रेस को महज 33% वोट मिले। चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार, 2020 में सुपौल सीट पर 2,88,703 मतदाता थे, जो 2024 तक बढ़कर 3,07,471 हो गए। यहां मतदान का प्रतिशत लगभग 60% के आसपास रहता है।

अगर जातीय समीकरण देखें तो मुस्लिम मतदाता यहां 20% से अधिक हैं, यादव 16.5% और अनुसूचित जाति 13.15% हैं। वहीं शहरी मतदाता करीब 15% हिस्सा रखते हैं। यही सामाजिक संरचना चुनावी समीकरण तय करती है। हालांकि बिजेंद्र यादव ने वर्षों से सभी समुदायों में अपनी मजबूत पकड़ बनाई है।

सुपौल की सबसे बड़ी समस्या बाढ़ है। कोसी नदी इस क्षेत्र के बीच से गुजरती है और हर साल बाढ़ आने पर अधिकांश गांव और खेत डूब जाते हैं। कृषि यहां की रीढ़ है और धान, मक्का और दालें प्रमुख फसलें हैं। लेकिन औद्योगिक विकास बहुत सीमित है। यही कारण है कि 2006 में पंचायती राज मंत्रालय ने सुपौल को देश के 250 पिछड़े जिलों में शामिल किया था। राजनीतिक दृष्टि से यह सीट अब एक अभेद्य गढ़ बन चुकी है। विपक्ष, चाहे कांग्रेस हो या अब ‘इंडिया गठबंधन’, कई बार संयुक्त मोर्चा बनाकर उतरा है लेकिन जेडीयू का आधार इतना मजबूत है कि उन्हें जीत का स्वाद नहीं मिल पाया। हालांकि 2025 में जब राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी गठबंधन एकजुट होने का दावा कर रहा है, तब सुपौल जैसी सीटों पर वह अपनी ताकत आजमा सकता है। बावजूद इसके, स्थानीय राजनीति जानने वाले मानते हैं कि बिजेंद्र यादव की छवि, वर्षों की पकड़ और विकास योजनाओं का प्रभाव उन्हें एक बार फिर बढ़त दिला सकता है। सुपौल विधानसभा की तस्वीर यही दिखाती है कि यह सीट फिलहाल जेडीयू के लिए एक ‘सुरक्षित किला’ बनी हुई है, जहां विपक्ष की हर चुनौती अब तक नाकाम साबित हुई है।

# गांधी जयंती पर साबरमती रेलवे स्टेशन पर श्रद्धांजली, श्रमदान एवं स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन

**(जीएनएस)।** पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर स्वच्छता पखवाड़ा-2025 एवं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर 2025 को साबरमती रेलवे स्टेशन पर श्रद्धांजली, श्रमदान एवं स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महात्मा गांधी की स्वच्छता और जनसेवा के प्रति अटूट निष्ठा की स्मृति में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश द्वारा महात्मा गांधी जी को माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हुई। इस अवसर पर मंडल के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण भी उपस्थित रहे।

इस आयोजन के अंतर्गत स्टेशन परिसर में स्वच्छता और स्वास्थ्य के संदेश को प्रसारित करने हेतु एक नुक्कड़ नाटक का आयोजन भी किया गया। इस नाटक ने यात्रियों और कर्मचारियों का ध्यान आकर्षित किया तथा सार्वजनिक स्थलों पर स्वच्छता बनाए रखने के महत्व को प्रभावी रूप से रेखांकित किया।

इसके उपरांत, रेलवे अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने मिलकर श्रमदान किया और स्टेशन परिसर को स्वच्छ बनाया। यह सामूहिक प्रयास अहमदाबाद मंडल के यात्रियों को स्वच्छ, सुरक्षित एवं अनुकूल वातावरण प्रदान करने की प्रतिबद्धता का परिचायक है। गांधी जयंती के इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों के साथ साबरमती रेलवे स्टेशन का निरीक्षण भी किया गया। निरीक्षण के दौरान विशेष रूप से भीड़ प्रबंधन, सुरक्षा उपायों तथा दीपावली पर्व के मद्देनज़र संभावित यात्री वृद्धि को ध्यान में रखते हुए स्टेशन की समग्र तैयारियों की समीक्षा की गई। यात्रियों की सुविधा, रखरखाव और सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश भी प्रदान किए गए। अहमदाबाद मंडल महात्मा गांधी जी के आदर्शों को आत्मसात करते हुए निरंतर स्वच्छता, कार्यकुशलता और उत्कृष्ट यात्री सेवाओं की दिशा में प्रयासरत है तथा रेल यात्रियों को बेहतर अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

# वडोदरा मंडल द्वारा महात्मा गांधी जयंती के अवसर पर स्वच्छता कार्यक्रमों का आयोजन

**(जीएनएस)।** पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल में 01 से 15 अक्टूबर 2025 तक “स्वच्छता पखवाड़ा – 2025” का आयोजन किया जा रहा है। इस पखवाड़े का उद्देश्य स्वच्छता को जन-आंदोलन का रूप देना तथा रेलवे परिसरों एवं यात्री सुविधाओं में स्वच्छता को और अधिक सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाना है।

महात्मा गांधी जयंती (02.10.2025) के अवसर पर वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के नेतृत्व में स्वच्छता, जागरूकता और सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने हेतु विविध गतिविधियों का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर वडोदरा रेलवे स्टेशन पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री नीरज धमीजा, पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन वडोदरा की अध्यक्षा डॉ. कविता भडके, विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी, स्काउट एंड गाइड तथा बड़ी संख्या में रेल कर्मचारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत में सभी प्रतिभागियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। इसके उपरांत प्रभात फेरी का आयोजन किया गया, जो स्टेशन क्षेत्र से होते हुए कॉन्कोर्स हॉल में समाप्त हुई। यात्रियों और स्थानीय नागरिकों में जागरूकता फैलाने हेतु नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। साथ ही “स्वच्छता ही सेवा – 2025” अभियान के अंतर्गत चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसके विजेताओं को मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके एवं डॉ. कविता भडके द्वारा पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम के समापन पर मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने सफाई सेवकों तथा स्काउट एंड गाइड को भोजन परोसकर सम्मानित किया। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री नीरज धमीजा एवं डॉ. कविता भडके ने भी सहयोग किया।

इसके अतिरिक्त विभिन्न संगठनों जैसे Zeroite, Kachare Se Azadi Foundation, Plasto Fuel, Compost Generation by Waste Management Plant, Vadodara Yard, CDAC – Air Pravah आदि ने अपशिष्ट प्रबंधन और स्थिरता पर अपने अभिनव कार्यों और विचारों का प्रदर्शन किया।

# रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार ने आज नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर अमृत संवाद में भाग लिया और यात्रियों से बातचीत की

**यह पहल नागरिकों की भागीदारी को मज़बूत करने और अमृत काल के दौरान स्टेशनों के आधुनिकीकरण में सहयोग प्रदान करने पर केंद्रित है ताकि एक विकसित, आधुनिक और यात्री-अनुकूल रेलवे नेटवर्क बनाया जा सके**

**(जीएनएस)।** ई दिल्ली, माननीय प्रधानमंत्री द्वारा प्रतिपादित अमृत काल के दृष्टिकोण और पंच प्रण के सिद्धांत के मार्गदर्शन में, रेल मंत्रालय ने विशेष अभियान 5.0 के अंतर्गत एक नई नागरिक-केंद्रित पहल शुरू की है। पिछले वर्ष भारतीय रेलवे में आयोजित रेल चौपाल से प्रेरित होकर, यह पहल अब अमृत संवाद के रूप में आयोजित की गई।

आज, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार ने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर अमृत संवाद में भाग लिया। अमृत संवाद के दौरान, उन्होंने यात्रियों से बातचीत की और स्टेशनों पर किए गए विभिन्न सुधारों पर यात्रियों से फीडबैक लिया।

श्री सतीश कुमार ने स्वच्छता ही सेवा अभियान के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 8 सफाई मित्रों को एवं 3 छात्रों को, जो स्वच्छता के थीम पर आयोजित पेंटिंग कंपटीशन के विजेता थे, सम्मानित किया।

अमृत संवाद रेलवे अधिकारियों और नागरिकों के बीच संवाद के लिए एक सीधा मंच प्रदान करता है, जिससे यात्रियों की प्रतिक्रिया, चिंताओं और सुझावों पर ध्यान दिया जा सके। अमृत संवाद पूरे भारतीय रेलवे में अमृत स्टेशनों एवं अनेक अन्य प्रमुख स्टेशनों पर 2 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक आयोजित किया जाएगा।

इस पहल में अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत स्टेशनों पर किए गए सुधारों पर प्रकाश डाला जाएगा, जिनमें शामिल हैं:

उन्नत प्रतीक्षालय और शौचालय।

बेहतर लिफ्ट, एस्केलेटर और यात्री सूचना प्रणाली।

मुफ़्त वाई-फाई और एक स्टेशन एक उत्पाद कियोस्क।

भूनिर्माण और सौंदर्य संवर्धन।

दिव्यांगजनों के लिए सुविधाएँ और अन्य सुगम्यता उपाय।

अमृत संवाद आगे के सुधारों के लिए सुझाव भी एकत्र करेगा, जैसेः

बेहतर यातायात और शहरी परिवहन प्रणालियों के साथ एकीकरण।

अतिरिक्त यात्री सुविधाएँ।

ऊर्जा-कुशल और टिकाऊ समाधान।

बेहतर प्लेटफ़ॉर्म कवर और यात्रियों के लिए व्यक्तिगत सुविधाएँ।

यह पहल नागरिकों की भागीदारी को मजबूत करने, स्टेशनों के आधुनिकीकरण में सहयोग देने और अमृत काल के दौरान एक विकसित, आधुनिक और यात्री-अनुकूल रेलवे नेटवर्क के लिए भारत के व्यापक दृष्टिकोण के अनुरूप कार्य करने पर केंद्रित है।

स्वच्छता ही सेवा अभियान 2025 के दौरान, भारतीय रेलवे ने स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित हुई। संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः

स्वच्छता ही सेवा - 2025 (17.09.25 से 02.10.25) पर रिपोर्ट - भारतीय रेलवे द्वारा स्वच्छता गतिविधियाँ

1. स्वच्छता शपथ लेने वाले लोग (संख्या)-240856
2. जन जागरूकता कार्यशालाएँ (संख्या)-2452
3. एनजीओ, सीएसओ आदि के साथ कार्यक्रम (संख्या)-361
4. सफाई मित्र सुरक्षा शिविर/स्वास्थ्य शिविर (संख्या)-1117
5. प्रदान किए गए सुरक्षा PPE और उपकरण (संख्या)-26059
6. मैराथन (संख्या)-215
7. साइक्लोथन (संख्या)-239
8. वॉकएथन (संख्या)-663
9. एसबीएम खेल लीग (संख्या)-476
10. लगाए गए पौधे (संख्या)-74078
11. कम करें, दोबारा इस्तेमाल करें, रीसायकल करें (RRR) गतिविधियाँ (संख्या)-1077
12. कचरे से कलाकृतियाँ (संख्या)-1222
13. पर्यावरण के अनुकूल और जीरो वेस्ट उत्सव (संख्या)-273
14. रीसायकल उत्पाद (रुपये में राशि)-25588887
15. घर-घर जागरूकता (संख्या)-9763
16. श्रमदान - एक दिन, एक घंटा, एक साथ में भागीदारी (संख्या) 25.09.2025-71569
17. स्वच्छ भोजन पहल (संख्या)-792
18. ट्रेनों में कीड़ों और चूहों के नियंत्रण के लिए विशेष अभियान (प्रभावित ट्रेनों की संख्या)-316
19. स्टेशनों पर कीड़ों और चूहों के नियंत्रण के लिए विशेष अभियान (प्रभावित स्टेशनों की संख्या)-363
20. स्वच्छ भारत सांस्कृतिक महोत्सव (संख्या)-154
21. एसबीएम के लिए प्रतियोगिताएँ (संख्या)-122
22. यूथ कनेक्ट कार्यक्रम (संख्या)-115
23. सार्वजनिक शौचालयों और ट्रेनों की सफाई और उन्नयन (संख्या)-1556
24. बेस किचन की सफाई रेस्टोरेंट/फूड स्टॉल/पैंट्री कार (संख्या)-489
25. पैंट्री कारों में स्मार्ट डस्टबिन लगाए गए (संख्या)-326
26. हटाया गया प्लास्टिक (टन में)-364.558
27. वर्कशॉप से इकट्ठा किया गया स्क्रैप (टन में)- 2898.29
28. प्रभात फेरी (संख्या)-638
29. सफाई मित्रों को सम्मानित किया गया (संख्या)-1146
30. विभिन्न प्रतियोगिताओं/मंडपों/पूजा समितियों को दिए गए पुरस्कार (संख्या)-98
31. साफ किए गए रेलवे ट्रैक (किमी में)-1096.6
32. SHS-2025 के दौरान रेलवे परिसर में साफ किए गए जलस्रोत (नदियाँ, झीलें, तालाब, नाले आदि) (संख्या)-

# महात्मा गांधी जयंती एवं स्वच्छ भारत दिवस के अवसर पर भावनगर रेलवे मंडल में निरीक्षण, वृक्षारोपण एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन

**(जीएनएस)।** महात्मा गांधी जयंती एवं स्वच्छ भारत दिवस के उपलक्ष्य में 02 अक्टूबर, 2025 (गुरूवार) को पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल पर “स्वच्छता ही सेवा – 2025” एवं “स्वच्छता पखवाड़ा – 2025” का भव्य समापन समारोह का आयोजन किया गया। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने जानकारी देते हुए बताया कि भावनगर परा स्थित रेलवे पुलिस पोस्ट परिसर (सिन्हा कॉलोनी), भावनगर परा स्थित रेल रेल उद्यान, भावनगर परा स्थित रेलवे संग्रहालय में मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा, अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमाँशु शर्मा एवं शाखा अधिकारियों द्वारा निरीक्षण एवं वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO), भावनगर मंडल की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा एवं महिला कल्याण संगठन की सभी पदाधिकारियों द्वारा भावनगर परा स्थित रेलवे संग्रहालय का निरीक्षण एवं मंडल सुरक्षा आयुक्त कार्यालय के परिसर में शहीद स्मारक के पास वृक्षारोपण किया गया। इन स्थलों पर पौधारोपण के माध्यम से पर्यावरण संतुलन एवं हरित क्षेत्र बढ़ाने का संदेश दिया गया। इस अभियान ने स्थानीय नागरिकों एवं रेलवे कर्मचारियों को स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अभियान का समापन समारोह मंडल कार्यालय स्थित सभा कक्ष में संपन्न हुआ। पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO), भावनगर मंडल की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा एवं महिला कल्याण संगठन की सभी पदाधिकारियों द्वारा केन्द्रीय विद्यालय, बाल मंदिर एवं कीड्स हट के 12 बच्चों को चित्रकला प्रतियोगिता में विजेता होने पर पुरस्कृत कर प्रोत्साहित किया गया। इन बच्चों ने स्वच्छता, हरित पर्यावरण एवं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आदर्शों को अपनी चित्रकृतियों के माध्यम से जीवंत किया। इसके साथ स्वच्छता पखवाड़ा-2025 के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले 12 कर्मचारियों को मंडल रेल प्रबंधक द्वारा अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। जिन्हें “स्वच्छता ही सेवा – 2025” अभियान (दिनांक 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025) के दौरान किए गए असाधारण योगदान हेतु पुरस्कृत किया गया। इन कर्मचारियों ने “वेस्ट टू आर्ट”, क्लीनलीनेस टारगेट यूनिट (CTU) में सुधार, कार्यस्थल पर साफ-सफाई, जन-जागरूकता एवं श्रमदान जैसी गतिविधियों में उल्लेखनीय कार्य किया।

17 दिनों तक चले इस अभियान में मंडल स्तर पर कई स्थानों पर श्रमदान, स्वच्छता रैली, जागरूकता अभियान एवं पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित हुए। “वेस्ट टू आर्ट” की पहल के अंतर्गत रेलवे कर्मचारियों एवं उनके परिवारों ने कबाड़ एवं अवशिष्ट वस्तुओं को उपयोगी कलाकृतियों में परिवर्तित कर पर्यावरण संरक्षण का उदाहरण प्रस्तुत किया। स्टेशन परिसर, कॉलोनियों, कार्यशालाओं एवं कार्यालयों में व्यवस्थित सफाई एवं स्वच्छ वातावरण बनाए रखने हेतु संयुक्त प्रयास किए गए। इस पूरे पखवाड़े के दौरान अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यालय के विद्यार्थियों एवं नागरिकों की सक्रिय भागीदारी रही। यह समारोह केवल एक औपचारिक कार्यक्रम न होकर, महात्मा गांधी के “स्वच्छता ही सेवा” के आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम सिद्ध हुआ। भावनगर मंडल ने इस अवसर पर यह संकल्प लिया कि आने वाले समय में भी रेलवे परिसर एवं समाज को स्वच्छ, हरित एवं स्वस्थ बनाने हेतु निरंतर प्रयास जारी रखेगा।

# बिहार में घुसपैठियों का मुद्दा BJP के लिए चुनावी रणनीति में महत्वपूर्ण

**(जीएनएस)**। बिहार विधानसभा चुनाव के नज़दीक आते ही राज्य में सियासी हलचल तेज़ हो गई है। महागठबंधन के नेता तेजस्वी यादव और राहुल गांधी लगातार जनता के बीच सक्रिय हैं। महागठबंधन का दावा है कि उनका फोकस वोटर अधिकार यात्रा और मतदाता जागरूकता पर है, लेकिन भाजपा इस मौके को राजनीतिक रणनीति के रूप में भुनाने में लगी है। भाजपा के शीर्ष नेता, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने लगातार घुसपैठियों के मुद्दे को उठाया है और विपक्ष पर निशाना साधा है कि वे विदेशी घुसपैठियों का संरक्षण कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने पूर्णिया में रैली के दौरान महागठबंधन पर आरोप लगाया कि उनके नेतृत्व वाले दल अवैध घुसपैठियों की सुरक्षा में व्यस्त हैं। मोदी ने स्पष्ट किया कि एनडीए की जिम्मेदारी है कि हर घुसपैठिए को बाहर निकाला जाए और भारत में कानून का शासन स्थापित रहे। उन्होंने कहा कि घुसपैठियों के चलते देश में युवाओं की रोज़ी-रोटी, महिलाओं की सुरक्षा और वन भूमि पर कब्जा प्रभावित हो रहा है। प्रधानमंत्री के इस बयान का उद्देश्य केवल चुनावी फायदे के लिए नहीं, बल्कि सीमांचल क्षेत्र के मतदाताओं में सुरक्षा और कानूनी कार्रवाई का संदेश पहुंचाना भी है।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने महागठबंधन की 14 दिवसीय मतदाता अधिकार यात्रा पर टिप्पणी करते हुए कहा कि इसका उद्देश्य घुसपैठियों के मताधिकार की रक्षा करना है, जबकि वास्तव में यह विपक्ष की राजनीतिक चाल है। शाह ने चेताया कि अवैध प्रवासियों को मतदाता सूची में शामिल करने और फर्जी दस्तावेजों के माध्यम से उन्हें वोट देने का अधिकार देने की कोशिश राज्य में मतों की स्वच्छता और चुनाव की निष्पक्षता को प्रभावित कर सकती है। बीजेपी पहले भी विभिन्न राज्यों में अवैध घुसपैठ को चुनावी मुद्दा बना चुकी है। दिल्ली विधानसभा चुनाव के दौरान अवैध रोहिंग्या और बांग्लादेशी प्रवासियों का मुद्दा जोरशोर से उठाया गया। भाजपा के नेताओं ने आम आदमी पार्टी पर आरोप लगाया कि उन्होंने दिल्ली के ओखला क्षेत्र में अवैध प्रवासियों को बसाया और फर्जी मतदाता जोड़कर चुनाव में गड़बड़ी की। इसके परिणामस्वरूप भाजपा ने दिल्ली में 70 में से 48 सीटें जीतकर आप सरकार को उखाड़ फेंका। झारखंड चुनाव में भी भाजपा ने इसी रणनीति का इस्तेमाल किया और राज्य सरकार पर अवैध प्रवासियों के लिए आश्रय देने का आरोप लगाया। प्रधानमंत्री ने स्वतंत्रता दिवस पर अवैध घुसपैठ के माध्यम से देश की जनसांख्यिकी बदलने की साजिश का हवाला देते हुए उच्चस्तरीय डेमोग्राफी मिशन की घोषणा की थी।

बिहार में सीमांचल क्षेत्र की राजनीतिक अहमियत और भी ज्यादा है। राज्य की कुल 243 विधानसभा सीटों में से 24 सीटें सीमांचल में हैं, जो चार जिलों — पूर्णिया, अररिया, किशनगंज और कटिहार — में फैली हैं। इस क्षेत्र में मुस्लिम आबादी का प्रतिशत पूरे राज्य के औसत से कहीं अधिक है, जिससे महागठबंधन को पारंपरिक रूप से मजबूत वोट बैंक मिलता है। पिछली बार इस क्षेत्र में एआईएमआईएम ने पांच सीटें जीतकर विपक्षी वोटों को विभाजित किया, जिससे भाजपा को लाभ हुआ। बीजेपी बिहार उपाध्यक्ष संतोष पाठक ने कहा कि हाल ही में संपन्न एसआईआर प्रक्रिया से सीमांचल में अवैध प्रवासियों की मौजूदगी की पुष्टि हुई है। हालांकि उन्होंने जोर दिया कि इस चुनाव में भाजपा केवल विकास के मुद्दे को लेकर जनता के बीच जाएगी। उनका कहना है कि घुसपैठियों का मुद्दा सीमांचल में महत्वपूर्ण जरूर है, लेकिन एनडीए का मुख्य फोकस सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसे विकासात्मक एजेंडे पर होगा। इस पूरी रणनीति का उद्देश्य यह दिखाना है कि भाजपा केवल चुनावी फायदे के लिए घुसपैठियों का मुद्दा नहीं उठा रही, बल्कि सीमा क्षेत्रों में कानून और सुरक्षा के महत्व को उजागर कर रही है। महागठबंधन के लिए चुनौती यह है कि तेजस्वी यादव और राहुल गांधी की जोड़ी सीमांचल में अपने पारंपरिक वोट बैंक को बनाए रख सके और विकास और सुरक्षा के बीच संतुलन बना सके। बिहार के चुनावी मैदान में घुसपैठियों के मुद्दे पर भाजपा की आक्रामक रणनीति यह संकेत देती है कि राज्य में विपक्ष को केवल मतदाताओं को चेताने का नहीं, बल्कि सुरक्षा और कानूनी कार्रवाई का संदेश भी देना है।

## मराठा आरक्षण पर पंकजा मुंडे का विरोध प्रदर्शन, “हमारी थाली से मत छीनिए”

**(जीएनएस)**। बीड़। महाराष्ट्र सरकार में मंत्री पंकजा मुंडे ने मराठा आरक्षण के मुद्दे पर सरकार के रुख के खिलाफ अपनी चिंता जाहिर की। गुरुवार को बीड़ जिले के सावरगांव घाट में दशहरा रैली में उन्होंने कहा कि मराठों को सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण दिया जाना चाहिए, लेकिन यह ओबीसी समुदाय से छीनकर नहीं दिया जाना चाहिए, क्योंकि इस समुदाय के लोग पहले से ही भूख और कठिनाइयों से जूझ रहे हैं।

रैली में पंकजा मुंडे ने कहा, “गोपीनाथ मुंडे ने मराठा आरक्षण का समर्थन किया था और हम भी इसके पक्ष में हैं, लेकिन इसे हमारी थाली से मत छीनिए। मेरा समुदाय आज भी भूख से जूझ रहा है। लोगों का संघर्ष देखकर मेरी नींद उड़ गई है।” उन्होंने जातिवाद के खतरे पर भी जोर दिया और कहा कि इसे समाज से समाप्त करने की आवश्यकता है।

पंकजा ने कहा कि उन्होंने कभी भी अपने चुनाव प्रचार में किसी व्यक्ति की जाति पर ध्यान नहीं दिया और हमेशा मानवता को सर्वोपरि रखा। उनका यह बयान मराठा आरक्षण को लेकर चल रही राजनीतिक बहस और सामाजिक तनाव के बीच आया है। मंत्री का कहना है कि आरक्षण नीति में ऐसे बदलाव नहीं होने चाहिए जो पहले से पिछड़े और संघर्षरत समुदायों को और अधिक नुकसान पहुंचाएं।

## बरेली में 48 घंटे के लिए इंटरनेट और एसएमएस सेवाएं बंद, योगी सरकार ने आदेश जारी किया

**(जीएनएस)**। बरेली। शुक्रवार जुमा की नमाज के बाद बरेली में हुई हिंसक घटनाओं के बाद राज्य सरकार ने सुरक्षा कड़े करने का कदम उठाया है। प्रदर्शनकारियों द्वारा पुलिस पर पथराव किए जाने के बाद पुलिस ने लाठीचार्ज किया, जिसमें कई पुलिसकर्मी घायल हुए। इस घटना में इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल (IMC) के अध्यक्ष तौकीर रजा समेत 81 लोगों को गिरफ्तार किया गया।

साम्प्रदायिक तनाव को देखते हुए सरकार ने बरेली में इंटरनेट, ब्रॉडबैंड और एसएमएस सेवाओं को अगले 48 घंटे के लिए बंद करने का आदेश दिया है। गृह सचिव गौरव दयाल द्वारा जारी पत्र के अनुसार यह आदेश 2 अक्टूबर दोपहर 3 बजे से 4 अक्टूबर दोपहर 3 बजे तक लागू रहेगा।

गृह विभाग ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, वॉट्सऐप और टेलीग्राम पर अफवाहें फैलने की आशंका जताई है। प्रशासन का कहना है कि इन प्लेटफॉर्म्स का गलत इस्तेमाल माहौल बिगाड़ सकता है।

शहर में पुलिस-प्रशासन ने सुरक्षा बढ़ा दी है और उपद्रवियों की पहचान कर उन पर कार्रवाई जारी रखी है। सरकार का यह कदम तनाव को नियंत्रण में रखने और शांति बनाए रखने के उद्देश्य से लिया गया है।

# अलीगढ़ में व्यापारी अभिषेक गुप्ता हत्याकांड का खुलासा, पूजा शकुन पांडे और पति के खिलाफ मामला दर्ज

**(जीएनएस)**। अलीगढ़ में 26 सितंबर को हुई व्यापारी अभिषेक गुप्ता की हत्या के मामले में पुलिस ने बड़ा खुलासा किया है। जांच अधिकारियों के मुताबिक इस हत्या में हिंदू महासभा की नेता और महामंडलेश्वर पूजा शकुन पांडे तथा उनके पति अशोक पांडे का हाथ था। मुख्य शूटर मोहम्मद फजल ने पूछताछ में कबूल किया कि हत्या उनके इशारे पर की गई थी और इसके लिए उन्हें कुल तीन लाख रुपये की सुपारी दी गई थी, जिसमें से एक लाख रुपये एडवांस के तौर पर दिए गए थे।

पुलिस ने इस मामले में सीसीटीवी फुटेज, मुखबिरों की सूचना और गहन पूछताछ के आधार पर गिरफ्तारी की कार्रवाई की। आरोपी शूटर मोहम्मद फजल को गिरफ्तार किया गया है, जबकि पूजा शकुन पांडे और एक अन्य आरोपी अभी फरार हैं। पुलिस ने अशोक पांडे को पहले ही जेल भेजा है। एसएसपी नीरेज कुमार जादौन ने बताया कि मामले की जाँच में यह पता चला कि हत्या के पीछे पैसों का विवाद था। अभिषेक गुप्ता का परिवार आरोप लगाता रहा था कि पांडे दंपति उनके साथ लंबे समय से वित्तीय विवाद में उलझे हुए थे और लगातार दबाव डालते थे। पूजा शकुन पांडे अलीगढ़ की विवादित धार्मिक और राजनीतिक हस्ती मानी जाती हैं। पहले गणित की टीचर रही पूजा ने बाद में संन्यास ग्रहण किया और हिंदू महासभा की प्रमुख नेता के रूप में सक्रिय हुईं। उन्हें निरंजनी अखाड़ा की महामंडलेश्वर भी कहा जाता है। उनके पति अशोक पांडे हिंदू महासभा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हैं। इस मामले ने शहर में सनसनी फैलाने का काम किया है, क्योंकि यह हत्या न केवल सुपारी के विवाद से जुड़ी थी, बल्कि एक धार्मिक और राजनीतिक नेता के नाम से भी जुड़ी हुई थी। पुलिस अब फरार आरोपियों की तलाश में लगी हुई है और मामले की गहन जांच जारी है। जांच अधिकारियों का कहना है कि जल्द ही सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर मामले को अदालत में पेश किया जाएगा।

# संविधान सत्याग्रह पदयात्रा का सेवाग्राम में भव्य समापन, कांग्रेस ने RSS पर साधा निशाना

**(जीएनएस)**। मुंबई/सेवाग्राम। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती, अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस, धम्मचक्र परिवर्तन दिवस और विजयादशमी के अवसर पर महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने संविधान और गांधी विचारों के समर्थन में आयोजित संविधान सत्याग्रह पदयात्रा का सेवाग्राम में भव्य समापन किया। इस पदयात्रा में भाग लेने वाले कार्यकर्ताओं ने संविधान के महत्व और महात्मा गांधी के अहिंसात्मक मार्ग का स्मरण करते हुए अपने विचारों को साझा किया।

समापन अवसर पर कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाळ ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) पर तीखा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि संघ के 100 वर्ष पूरे होने के बावजूद उसकी भूमिका आज भी “मूंह में राम, बगल में छुरी” जैसी ही है। उन्होंने संघ पर आरोप लगाया कि वह महात्मा गांधी और उनके योगदान के खिलाफ भ्रामक प्रचार करता रहा है, जैसे कि गांधीजी की वजह से देश के विभाजन और पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये देने जैसी बातें प्रचारित करना। सपकाळ ने स्पष्ट किया कि यह पूरी तरह असत्य है और गांधीजी के कारण ही देश अखंड बना रहा। उन्होंने यह भी कहा कि गांधीजी ने भगतसिंह को बचाने का प्रयास किया, जो इतिहास में दर्ज सत्य है।

उन्होंने आगे कहा कि हाल ही में नागपुर में संघ द्वारा गांधीजी को श्रद्धांजलि देने का आयोजन इस बात का प्रमाण है कि वैचारिक रूप से संघ को पराजय स्वीकार करनी पड़ी है। कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष ने घोषणा की कि पार्टी संविधान की प्रति लेकर बार-बार संघ मुख्यालय जाएगी और संघ से संविधान स्वीकार करने की मांग करेगी। यदि संघ इसे स्वीकार नहीं करता है, तो आगामी 30 जनवरी (गांधी पुण्यतिथि) और 14 अप्रैल (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती) को भी यह प्रयास जारी रहेगा।

विधिमंडल दल के नेता विजय वडेट्टीवार ने कहा कि संविधान ही समाज के सभी वर्गों और शोषित-पीड़ित लोगों को साथ लेकर चलने वाला मार्गदर्शक है। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछले 11 वर्षों में केंद्र की सरकार ने जाति और धर्म के नाम पर द्वेष फैलाकर देश को अस्थिर किया है, किसानों और बेरोजगारों की समस्याओं की अनदेखी की है और देश पर कर्ज का बोझ बढ़ाया है।

पदयात्रा में कांग्रेस के अनेक वरिष्ठ नेता और पदाधिकारी शामिल थे। इनमें गांधीजी के भतीजे पणतू तुषार गांधी, माजी न्यायमूर्ति बी. जी. कोळसे पाटील, शहीद भगतसिंह के भांजे प्रो. जगमोहन, माजी मंत्री सुनील केदार, रणजित कांबळे, राजेंद्र मुळक, अनिस अहमद, सांसद डॉ. कल्याण काळे, सांसद गोवाल पाडवी, चारुलता टोकस, प्रदेश सरचिटणीस संदेश सिंगलकर, प्रवक्ता अतुल लोंढे, वर्धा कांग्रेस अध्यक्ष मनोज चांदूरकर, युवक कांग्रेस अध्यक्ष उदय भान और शिवराज मोरे शामिल थे।

पदयात्रा की शुरुआत से पहले स्वतंत्रता सेनानी व सामाजिक कार्यकर्ता जी. जी. पारीख को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कांग्रेस नेताओं ने कहा कि पारीख का जीवन और संघर्ष आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा। इस पदयात्रा ने संविधान और गांधीवादी मूल्यों के प्रति जनमानस में जागरूकता पैदा करने के साथ ही लोकतांत्रिक अधिकारों और सामाजिक समरसता की दिशा में एक महत्वपूर्ण संदेश दिया।

## JNU में रावण पुतले को लेकर ABVP और लेफ्ट छात्रों में विवाद, उमर खालिद और शरजील इमाम की तस्वीरें बनीं विवाद का केंद्र

**(जीएनएस)**। नई दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) में विजयादशमी और दशहरा उत्सव के दौरान अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) और लेफ्ट विंग के छात्रों के बीच तीव्र विवाद देखने को मिला। विवाद का केंद्र रावण के पुतले पर कुछ छात्रों की तस्वीरें थीं, जिनमें पूर्व छात्र नेता उमर खालिद और शरजील इमाम को रावण के रूप में दिखाया गया था।

ABVP छात्रों का आरोप है कि लेफ्ट के छात्रों ने दुर्गा मां के विसर्जन के दौरान उन पर आपत्तिजनक व्यवहार किया। उनके मुताबिक, लेफ्ट छात्रों ने चप्पलें दिखाईं, महिषासुर के नारे लगाए और दुर्गा पूजा के लिए जा रहे ABVP छात्रों को आपत्तिजनक शब्दों से परेशान किया। ABVP का कहना है कि यह पूरी घटनाक्रम उनका धार्मिक आयोजन बाधित करने की कोशिश थी।

वहीं लेफ्ट छात्रों का कहना है कि विवाद का असली कारण पुतले पर उमर खालिद और शरजील इमाम की तस्वीरें लगाना था। उनका आरोप है कि ABVP ने इस पुतले को धार्मिक रंग देकर पूरे मामले को सनसनीखेज बनाने की कोशिश की। लेफ्ट छात्रों ने दावा किया कि दुर्गा पूजा का कार्यक्रम शांति से आयोजित हुआ, लेकिन पुतले पर विवाद के कारण उनका विरोध उत्पन्न हुआ।

अन्य छात्रों ने बताया कि शुरू में केवल आपत्ति और बहस हुई, लेकिन धीरे-धीरे दोनों पक्षों के बीच गाली-गलौच, नारेबाजी और चप्पल दिखाने जैसी घटनाएँ भी देखने को मिलीं। इस मामले ने JNU में धार्मिक और राजनीतिक ध्रुवीकरण की बहस को फिर से उभार दिया है।

विश्वविद्यालय प्रशासन ने फिलहाल विवाद पर कोई ठोस बयान नहीं दिया है, लेकिन दोनों छात्र संगठनों को शांतिपूर्ण ढंग से दशहरा समारोह पूरा करने का निर्देश दिया गया है। इस घटना ने छात्रों और राजनीतिक संगठनों के बीच जेएनयू कैंपस में तनाव और अलग-अलग दृष्टिकोणों को उजागर किया है।

# आरएसएस: सेवा, समर्पण और राष्ट्र आराधना की एक शताब्दी

**(जीएनएस)**। जब हम आज की तेज़-तर्रार और परिणामों की दुनिया में “सेवा, समर्पण और राष्ट्र आराधना” जैसे आदर्शों को याद करते हैं, तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की शताब्दी यात्रा अपने आप में एक प्रेरक कथा बन जाती है। 1925 में स्थापित यह संस्था अपने वैचारिक निरंतरता, सेवा-साधना और सांस्कृतिक प्रतिबद्धता की वजह से 100 वर्ष बाद भी जीवंत है। भारत के सामाजिक इतिहास में ऐसे कम ही उदाहरण मिलते हैं, जहाँ कोई संस्था बिना किसी सरकारी अधिकार या सत्ता प्रतिष्ठा के, केवल अनुशासन और समर्पण के बल पर एक शताब्दी तक सतत सेवा करती रही हो।

आज अनुमानित रूप से आरएसएस की लगभग 60,000 शाखाएँ देशभर में सक्रिय हैं, और इसके करोड़ों स्वयंसेवक विभिन्न स्तरों पर समाज सेवा, शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास और पर्यावरण संरक्षण में लगे हुए हैं। शाखाएँ केवल व्यायाम और शक्ति प्रदर्शन के केंद्र नहीं हैं, बल्कि यह चरित्र निर्माण, राष्ट्रभक्ति और सामाजिक समरसता के प्रशिक्षण स्थल हैं। यहाँ अनुशासन, स्व-संयम और सांस्कृतिक मूल्यों को निरंतर विकसित किया जाता है।

संघ ने राजनीतिक मंच से दूरी रखते हुए समाज जीवन के अनेक क्षेत्रों में योगदान दिया है। शिक्षा क्षेत्र में विद्या भारती ने 3,000 से अधिक विद्यालय स्थापित किए हैं, जो ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं। वनवासी कल्याण परियोजनाएँ लगभग 20,000 गांवों में संचालित होती हैं, जो शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवनोपयोगी प्रशिक्षण प्रदान करती हैं। आरएसएस स्वयंसेवक आपदा राहत कार्यों में भी लगातार सक्रिय रहे हैं। उदाहरण के लिए, 1999 के ओडिशा सुपर साइक्लोन, 2001 के भुज भूकंप, 2004 की सुनामी और 2020 की कोविड महामारी में स्वयंसेवकों ने भोजन वितरण, चिकित्सा सहायता और राहत शिविरों के माध्यम से समाज की सेवा की।

बीते सौ वर्षों के इस योगदान को औपचारिक राष्ट्रीय मान्यता तब मिली जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 1 अक्टूबर 2025 को संघ के शताब्दी समारोह के अवसर पर 100 का विशेष स्मारक सिक्का और एक डाक टिकट जारी किया। यह सम्मान केवल प्रतीकात्मक नहीं है, बल्कि यह संदेश देता है कि संघ की सेवा यात्रा अब राष्ट्रीय विरासत का हिस्सा बन गई है। इस स्मारक सिक्के पर भारत माता का चित्र पहली बार भारतीय मुद्रा पर अंकित किया गया है। सिक्के पर अंकित संघ का आदर्श वाक्य “राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय, इदं न मम” दर्शाता है कि जीवन व्यक्तिगत नहीं, बल्कि पूरी तरह राष्ट्र के लिए समर्पित है। डाक टिकट में 1963 के गणतंत्र दिवस परेड में संघ स्वयंसेवकों का दृश्य अंकित है, जो दर्शाता है कि संघ केवल वैचारिक संस्था नहीं, बल्कि राष्ट्रीय प्रतीकात्मकता का भी हिस्सा रहा है।

बेशक, इस कदम ने राजनीतिक प्रतिक्रियाएँ भी उत्पन्न कीं। विपक्ष ने इसे इतिहास के राजनीतिकरण और धर्मनिरपेक्षता पर आघात बताया। लेकिन स्मारक सिक्का केवल किसी संगठन का प्रमाणपत्र नहीं, बल्कि समाज में सेवा, अनुशासन और त्याग जैसी मूल्यों को प्रतिष्ठित करने का माध्यम भी है। मुद्रा और डाक टिकट केवल आर्थिक या डाकीय उपकरण नहीं हैं; उनका सांस्कृतिक महत्व कहीं अधिक है और ये आने वाली पीढ़ियों को यह बताते हैं कि राष्ट्र ने किन मूल्यों, व्यक्तियों और संस्थाओं को सम्मान दिया।

संघ की शताब्दी यात्रा पर मतभेद होना स्वाभाविक है, क्योंकि कोई भी जीवंत समाज बिना विमर्श के आगे नहीं बढ़ सकता। परंतु त्याग, संगठनशीलता और सेवा जैसी अवधारणाओं को यदि किसी संस्था ने एक शतक तक सिद्ध किया हो, तो उसे केवल राजनीतिक दृष्टिकोण से देखना उचित नहीं। शताब्दी वर्ष का यह अवसर केवल संघ के लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए चिंतन का अवसर है। यह हमें याद दिलाता है कि किसी संस्था के योगदान का मूल्यांकन पूर्वाग्रह से नहीं, बल्कि दीर्घकालिक प्रभाव और समाज में सेवा के स्तर से किया जाना चाहिए। आरएसएस ने सैकड़ों स्वयंसेवकों के माध्यम से एक सदी तक सेवा, समर्पण और राष्ट्र आराधना के आदर्शों को अक्षुण्ण रखा। चाहे लोग इसके समर्थक हों या आलोचक, अब इसे नजरअंदाज करना असंभव है। अपनी सतत सेवा और योगदान के बल पर संघ भारतीय समाज और राष्ट्रीय विमर्श का एक अहम हिस्सा बन चुका है।

## बृजभूषण शरण सिंह का बयान: "पढ़ने-लिखने की कोई जरूरत नहीं, नौकरियां आउटसोर्सिंग पर"

**(जीएनएस)**। कन्नौज। उत्तर प्रदेश के गोंडा से छह बार सांसद रहे और चर्चित बाहुबली नेता बृजभूषण शरण सिंह एक बार फिर अपने बयान को लेकर सुर्खियों में हैं। विजयदशमी के अवसर पर कन्नौज जनपद के छिबरामऊ में आयोजित शस्त्र पूजन कार्यक्रम में मंच से बोलते हुए उन्होंने कहा कि आज पढ़ाई-लिखाई का कोई विशेष महत्व नहीं रह गया है, क्योंकि नौकरियां पूरी तरह आउटसोर्सिंग पर आधारित हो गई हैं।

उन्होंने तंज भरे अंदाज में कहा, “पढ़ाई-लिखाई करके क्या करोगे? नौकरियां बची ही कहां हैं। सब आउटसोर्सिंग पर हो रहा है।” इस बयान के बाद वहां मौजूद लोग हैरान रह गए। सिंह ने आगे कहा कि सफलता पाने का सबसे आसान तरीका है – सफल लोगों के साथ रहना। अपनी आलीशान जीवनशैली का ज़िक्र करते हुए उन्होंने यह भी बताया कि वे किराए का नहीं बल्कि अपने खरीदे हुए निजी हेलिकॉप्टर से कार्यक्रम में पहुंचे हैं। इस दौरान उन्होंने यह दावा भी किया कि राजनीति हो या अन्य क्षेत्र, बड़े मुकाम तक पहुँचने के लिए संपन्न और प्रभावशाली लोगों की संगत में रहना बेहद जरूरी है।बृजभूषण शरण सिंह के इस बयान पर सोशल मीडिया पर खूब प्रतिक्रियाएँ आ रही हैं। कई लोग इसे युवाओं और बेरोजगारों का मज़ाक उड़ाने जैसा बता रहे हैं, तो कुछ ने इसे मौजूदा व्यवस्था की कटु सच्चाई बताकर समर्थन किया है। गौरतलब है कि बृजभूषण शरण सिंह गोंडा और पूर्वी उत्तर प्रदेश की राजनीति में लंबे समय से प्रभावशाली माने जाते हैं। वे पाँच बार बीजेपी और एक बार समाजवादी पार्टी के टिकट पर लोकसभा सांसद रह चुके हैं। उनका राजनीतिक सफर 1980 के दशक में छात्र राजनीति से शुरू हुआ और 1991 में वे पहली बार गोंडा से सांसद बने।